# स्कूली शिक्षा में भाषा का आकलन

## सार्थक तरीक़े अपनाने की ज़रूरत

माया मौर्य

यह लेख आकलन पर केन्द्रित है। लेखिका कहती हैं कि सीखने के दौरान किया गया सार्थक आकलन बेहतर सीखने में बच्चों की मदद करता है। कक्षा में उपयोग किए गए आकलन के तरीक़ों के उदाहरण वे इस लेख में देती हैं और यह दर्शाती हैं कि उपयोग में लिए गए इन तरीक़ों ने बच्चों की विभिन्न क्षमताओं को जान पाने में उनकी मदद की। यह उनके लिए काफ़ी मददगार रहा क्योंकि तब वे बच्चों के आगे सीखने के लिए नई गतिविधियाँ व अभ्यास सोच पाईं। -सं.

प्रेमपाल शर्मा अपनी किताब *शिक्षा, भाषा और प्रशासन* में कहते हैं कि शिक्षा का उद्देश्य बालक को एक बेहतर इंसान बनाना है। ऐसा इंसान जिसके जीवन और आचरण में सबके लिए बराबरी का भाव हो, जो मेहनत और क़ाबिलियत के बलबूते कमा और खा सके, जो संवेदनशील हो, तर्कशील हो और वैज्ञानिक सोच रखता हो। ऐसा नागरिक तैयार करना है, जो हर काम को बराबर सम्मान से देखे व समझे।

तर्कशीलता, वैज्ञानिक सोच, मानवीय मूल्य और जीवन के लिए ज़रूरी संवाद का कौशल अगर शिक्षा के व्यापक लक्ष्य हैं तो इन्हें हासिल करने और अधिगम कर्ता इस दिशा में कितना काम कर पा रहे हैं, यह सही से समझ पाने के लिए हमें आकलन के तरीक़ों पर नए तरीक़े से सोचने और समझने की ज़रूरत भी है।

### मूल्यांकन की आम प्रक्रिया

जैसा कि हम सभी जानते हैं, अधिकांश स्कूलों में मूल्यांकन की प्रक्रिया तीन भागों में होती है : त्रैमासिक, अर्धवार्षिक और वार्षिक। इस मूल्यांकन प्रक्रिया में, बच्चे के सीखने की गति व पाठ्यपुस्तक की विषयवस्तु में मेल है या नहीं, इस बात से कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता है। बस, हर जाँच के लिए तय किए गए पाठों के प्रश्न और उत्तर वग़ैरह तय समय-सीमा तक पूरे हो जाने चाहिए, ताकि शिक्षक तय समय पर होने वाली इन जाँचों के लिए प्रश्नपत्र बना पाएँ। बच्चे को पाठ समझ में आया कि नहीं, यह महत्त्वपूर्ण नहीं होता। महत्त्वपूर्ण यह होता है कि तय पाठ्यक्रम पूरा हो जाए।

मूल्यांकन के प्रश्नपत्र को देखने पर हम पाते हैं कि उसमें अधिकांश प्रश्न पाठ्यपुस्तक-आधारित ही होते हैं। ऐसे प्रश्न होते ही नहीं हैं, जिनमें बच्चे की अभिव्यक्ति झलके, या वो अपने शब्दों में कुछ लिख सके। निबन्ध या पत्र में भी बच्चे अपनी समझ से कुछ नहीं लिख सकते। जो कक्षा में बार-बार याद करवाया हो, वही लिखना होता है। यहाँ तक कि, मित्र को भी पत्र में वही लिखना होता है जो कक्षा में लिखाया गया है।

स्कूलों में, अधिकांशतः मूल्यांकन केवल लिखित जवाबों के माध्यम से जाँचा-परखा जाता है। पर क्या यह काफ़ी है? यदि कोई बच्चा मौखिक रूप से प्रश्नों के जवाब दे सके, प्रयोगों के अवलोकन और निष्कर्ष रख सके तो क्या यह नहीं मानेंगे कि वह कुछ समझा है?

सवाल यह भी है कि क्या वाक़ई बच्चे की समझ पूरे सालभर में किसी भी दिशा में नहीं बढ़ी होगी? यह कुछ अविश्वसनीय-सा लगता है।

वयस्कों द्वारा कोई सायास प्रयास किए बिना भी, बच्चे कक्षा में बैठना, एक दूसरे से बातचीत करना, आदि तो सीखते ही हैं। यही नहीं, मेरा कई कक्षाओं का अवलोकन रहा है कि पूरी पाठ्यपुस्तक में कहाँ क्या है, यह लगभग सभी बच्चे पहले से ही जानते हैं। यह वे बच्चे भी बता देते हैं जो लिखना-पढ़ना अच्छे-से नहीं जानते। वे उन पाठों के बारे में भी जानते हैं जो पढ़ाए नहीं गए हैं, और उनको भी जो उन्हें सबसे अच्छे लगते हैं। लेकिन ऐसी विषयवस्तु कभी भी किसी जाँच का हिस्सा नहीं होती। लिखित जाँच की सीमाओं से बाहर ऐसी कई क्षमताएँ बच्चे हासिल कर लेते हैं।

इसका मतलब यह नहीं है कि बच्चे स्वतः ही सभी कुछ सीख जाएँगे। पर इसका मतलब यह है कि बच्चे जो सीख रहे हैं, उसका आकलन करते हुए आगे बढ़ा जाए। मसलन, किसी कक्षा की शुरुआत उस अध्याय से क्यों नहीं हो सकती जो बच्चों को सबसे ज़्यादा पसन्द हो! अध्याय-एक से ही शुरू करना क्यों ज़रूरी है?

सीखने-सिखाने के दौरान बच्चों को आने वाली कठिनाई को समझते हुए, उसपर उनके साथ बात करते हुए काम करना ही सीखने का बेहतर तरीक़ा है। मेरा मानना है कि, असल में आकलन यही है कि सिखाने वाला, सीखने की प्रक्रिया के दौरान यह समझता रहे कि उसके द्वारा उपयोग में लाए जा रहे सिखाने के तरीक़ों और उदाहरणों में कुछ छूट रहा है। दूसरे शब्दों में, सीखने वाले के न सीख पाने के कारणों को समझने का प्रयास और तब उन कारणों पर काम करना आकलन की प्रक्रिया का एक अहम हिस्सा है। मसलन, यदि कोई बच्चा 'मकान' को 'पकान' या 'मछली' को 'पछली' लिख रहा है, लेकिन पढ़ सही रहा है तो यह समझ आ जाता है कि वह 'म' और 'प' में ज़्यादा अन्तर नहीं कर पा रहा। और तब उसे बोलने व लिखने के लिए इन वर्णों वाले ऐसे शब्द दिए जा सकते हैं जो उसके मन के क़रीब हैं, और जिनके अर्थ वह जानता है। जैसे– मामा, मम्मी, पापा, मकड़ी, पकड़ी आदि।

## परम्परागत स्वरूप से फ़र्क़ आकलन कैसा ?

हम जानते हैं कि एक ही कक्षा में पढ़ रहे बच्चों के सीखने का स्तर अलग-अलग होता है। बच्चों के स्तर, उनके सीखने की गति, और समझ को आधार मानते हुए ही कक्षा में कोई भी काम करना बेहतर रहता है। उदाहरण के लिए, शुरुआती कक्षाओं में चित्रात्मक कार्ड, बच्चे की मौखिक अभिव्यक्ति और उसके द्वारा प्रयोग की जाने वाली शब्दावली, वाक्य, आदि जानने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। इसके द्वारा बच्चे की सोच, आत्मविश्वास और उसकी मुखरता, झिझक आदि को भी देखा जा सकता है।

ज़्यादा सार्थक आकलन कैसे होता है, इसके कुछ अवलोकित उदाहरण नीचे दिए गए हैं। बॉक्स



में कुछ बुलेट पॉइंट दिए गए हैं जिन्हें अवलोकन के दौरान मूल्यांकन की नज़र से जाना, समझा, और डायरी में नोट किया।

## विषय : भाषा

कक्षा 1 से 2 (उम्र : 6 से 8 साल)

चित्रों पर आधारित बातचीत (मौखिक अभिव्यक्ति)

बच्चों को एक चित्र दिया गया। चित्र पेज 57 प्रदर्शित है।

*इस चित्र पर बातचीत के लिए निम्नलिखित प्रश्न थे :*

- *यह कहाँ का चित्र है?*
- *आपको चित्र में क्या-क्या दिख रहा है?*
- *आपके मोहल्ले में किस-किस दिन बाज़ार लगता है?*
- *आपके घर में से कौन-कौन बाज़ार जाता है?*
- *आपको बाज़ार में से कौन-कौन सी दुकानें लगी दिखती हैं?*
- *आपको बाज़ार में कौन-सी दुकान पर जाना ज़्यादा पसन्द है?*

हर प्रश्न के बाद बच्चों को अपनी बात कहने का समय दिया। सभी बच्चों ने चर्चा में खुलकर भाग लिया।

## इस चर्चा का अवलोकन

तन्नु : "मम्मी मुझे बाज़ार नहीं ले जाती हैं।"

कोहिनूर : "बाज़ार के पीछे कबाड़ की दुकान है। मैं, मेरी माँ और दादी सब वहीं कबाड़ का माल बेचते हैं। बस्ती के अन्दर वाली दुकान में हमको कम रेट मिलता है।"

अजय : "ये तो किसी ठेले पर लगी दुकान का फ़ोटो है। हमारे मोहल्ले का बाज़ार ज़मीन पर लगता है, सब नीचे बैठकर सब्ज़ी बेचते हैं। मछली और मटन की दुकान की लाइन अलग होती है। पापा रविवार को मटन लाते हैं।"

सिमरिता : "मुझे कपड़े और चप्पल की दुकान ज़्यादा पसन्द है। मेरी दादी मेरे लिए सैंडल लाई थीं। मुझे बड़ी पड़ गई, मौसी को दे दी।"

बातचीत के बाद मैंने बच्चों से कहा, "सभी बच्चों को बाज़ार में लगी दुकान के चित्र बनाने हैं। आप जिस दुकान में ज़्यादा जाना पसन्द करते हो उसके सामने ख़ुद को खड़ा करना है।"

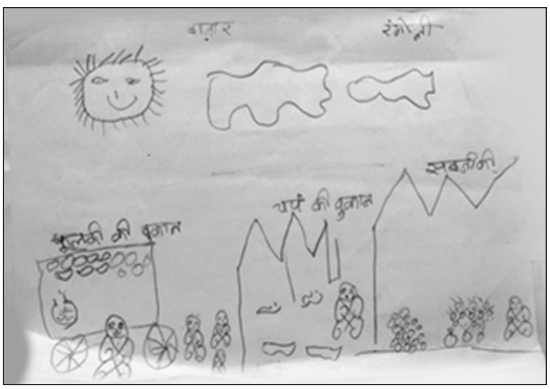
सभी बच्चों ने चित्र बनाए।

## बनाए गए चित्रों का अवलोकन

बेसना ने फुलकी की और सब्ज़ी की दुकान बनाई। चित्रों को बनाते वक़्त बच्चों ने अपनी पसन्द की फुलकी की दुकान पर ख़ुद को खड़ा किया।

रंगोली ने दुकान के नाम भी लिखे। विवेक ने सब्ज़ियों में हूबहू रंग भरे। रितिका सबको अपना चित्र दिखाते हुए नज़र आई।

कुछ बच्चों ने चित्र में टमाटर और आलू दोनों समान बनाए और दोनों में एक ही रंग भरा। शायद उनके पास एक ही रंग था, या



चित्र : रंगोली, 9 वर्ष

उन्हें एक ही रंग पसन्द था। अहम बात यह थी कि सभी बच्चों ने चित्र बनाए। अपनी पसन्द की दुकान भी चुनी।

## पढ़ने और लिखने का अभ्यास करवाना

कक्षा 1 से 2 (उम्र : 6 से 8 साल) (ये दोनों क्रियाएँ साथ-साथ व अलग-अलग भी चलती हैं)।

टीन, अचार, मेला, जामुन, टमाटर, जूता, थैला, बैल, रिबन, किताब, बादल, पेड़ आदि सभी शब्द बोर्ड पर लिखे गए। बच्चों से इन शब्दों को पढ़ने को कहा गया और तब समझ आया कि कुछ बच्चे इन शब्दों को पढ़ पा रहे हैं, कुछ नहीं। इसे ध्यान में रखते हुए बच्चों को दो समूहों में बाँटा गया।

पहले समूह में वे बच्चे थे जो पढ़ नहीं पा रहे थे। इस समूह के बच्चों को कहा गया कि वे दो-दो के समूह में इन शब्दों को पढ़ने की कोशिश करें। समूह के अन्य बच्चों से भी बातचीत कर सकते हैं। यह भी कि शब्दों को पढ़ने का कोई क्रम नहीं है, कहीं से भी शुरू कर सकते हैं। और इनके अलावा भी, जो शब्द वे पढ़ सकते हैं वे भी पढ़ें।

बच्चों ने पढ़ा। एक बच्चे ने पास लगे पोस्टर की मदद ली और चित्र को देखते हुए नाम पढ़ने की कोशिश की। कुछ बच्चे हिज्जे करके पढ़ने की कोशिश कर रहे थे। उनके अवलोकन से मुझे यह पता चल रहा था कि इस समूह के बच्चों को मात्रा पढ़ने में कठिनाई है।

दूसरा समूह उन बच्चों का था जो शब्दों को पढ़ पाए थे। इन बच्चों को ब, म, क और ज अक्षर से शुरू होने वाले शब्दों को लिखने का काम दिया। कुछ चित्र कार्ड दिए और उनका नाम लिखने को कहा।

## वाक्य पढ़वाना

कक्षा 1 से 2 (उम्र : 6 से 10 साल)

वाक्यों का चुनाव इस लिहाज़ से किया गया कि वे बच्चों के जीवन-सन्दर्भ से जुड़े हों। उनमें से कुछ शब्दों को वे पढ़ना / लिखना जानते हों। पैराग्राफ़ ज़्यादा लम्बा न हो, और बच्चे इन वाक्यों का प्रयोग भी करते हों। मेरे द्वारा चुने गए कुछ वाक्य थे–

आज सोमवार का दिन है।

नेहा ने ठेले से केले ख़रीदे।

सड़क के किनारे पीपल का पेड़ है।

गुड्डी को गन्ना बहुत पसन्द है।

धनकुमारी दीदी हमको पढ़ाती हैं, आदि।

मैंने पाया कि सभी बच्चे इन वाक्यों को समझ रहे थे। हालाँकि, कुछ बच्चे इनमें सिर्फ़ अक्षरों को ही पढ़ पा रहे थे, और बाक़ी बिना किसी कठिनाई के पढ़ रहे थे। साफ़ था कि किन बच्चों को कहाँ मदद की ज़रूरत है।

## लिखने का अभ्यास

बच्चों को चित्रात्मक कार्ड देकर कहा गया कि इसको ग़ौर से देखो और समझो। फिर



चित्र : माया मौर्य

उनको चित्र दिखाते हुए कुछ लिखने को कहा। जो बच्चे वाक्य लिखना नहीं जानते वो शब्दों को लिखेंगे, जिनको कहानी लिखनी नहीं आती है वो चित्र देखकर मन से कहानी लिखेंगे।

हर शिक्षक जानता है कि उसे पढ़ने वाले बच्चे का 'आकलन' अलग से करने की आवश्यकता नहीं है। यह सीखने-सिखाने के साथ-साथ चलता रहता है।

जैसा कि हम जानते हैं कि आकलन का आधार अकसर मौखिक व लिखित ही होता है। वैसे देखा जाए तो मौखिक और लिखित के अलावा भी कई कौशल अलग-अलग माध्यम से दिखते रहते हैं। इन कौशलों को पहचानने, देखने व बढ़ावा देने की ज़रूरत है जैसे– खेल, बाग़वानी, साफ़-सफ़ाई की ज़िम्मेदारी, पिकनिक व भ्रमण में।

हम शब्द और वाक्यों को पढ़ने वाले बच्चों से थोड़ा ऊपर तीसरी और पाँचवीं के बच्चों के साथ कक्षा में पढ़ाने के दौरान निम्न अभ्यास जाँच सकते हैं–

> कक्षा में सप्ताह के दो दिन तार्किक प्रश्न / काल्पनिक प्रश्न जैसे–
>
> 1. *अधूरी कहानी पूरी करो- एक लड़की पतंग उड़ा रही थी, तभी अचानक.............*
> 2. *तुम उसकी जगह होते तो क्या करते .....................*
> 3. *अगर तुम पक्षी होते तो क्या करते..................*

## साक्षात्कार द्वारा मूल्यांकन (मौखिक व लिखित)

एक दूसरे से जुड़कर सवाल-जवाब करने के लिए बच्चों के बीच आपसी भागीदारी को बढ़ाया जा सकता है। इसमें बच्चों को कुछ प्रश्न बनाकर दिए जा सकते हैं, जिनके आधार पर वे समुदाय के कामकाजी लोगों से साक्षात्कार कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, नीचे दिए गए प्रश्न गाँधीनगर बस्ती के बच्चों ने अपनी बस्ती में कर्ज़े से जुड़े विषय पर साक्षात्कार करते हुए पूछे। इस पूरी प्रक्रिया में 8 से 15 साल के बच्चे शामिल थे।

- *आपका नाम क्या है?*
- *आपके घर में कितने लोग रहते हैं?*
- *आपके घर कमाने वाले कितने लोग हैं?*
- *आप रोज़ाना कितना कमाते हैं?*
- *क्या आपको ज़रूरत पड़ने पर कर्ज़ा भी लेना पड़ता है? कितना और किससे कर्ज़ा लेते हो? आप कर्ज़ा कैसे चुकाते हो?*

ऐसे बच्चों को बस्ती में सब्ज़ी बेचने वाली आंटी से, दर्ज़ी, अण्डे बचने वाले, कबाड़ के मालिक, आदि से बातचीत करने और उनसे कुछ चुनिन्दा प्रश्नों के साथ साक्षात्कार लेने भेजते हैं। कुछ बच्चे लिख नहीं पाते, पर प्रश्न पूछने में माहिर हैं। कुछ लिखते हैं, पर थोड़ा संकोची हैं। बच्चों ने अपने अनुभवों की प्रस्तुति दी और पोस्टर भी बनाए। यही छोटे-छोटे काम हम शिक्षकों को मूल्यांकन के समय काम आते हैं।

## लिखित और मौखिक अवलोकन को उनकी पोर्टफ़ोलियो फ़ाइल से समझना

जब बच्चा स्कूल आना शुरू करता है, तब चित्रों के माध्यम से अपनी अभिव्यक्ति, रुचि, सोच और अपने आसपास की दुनिया को पहली बार काग़ज़ पर उकेरता है। इन चित्रों के द्वारा वह हमें अपने मन की और वास्तविक बातें बताता है। जैसा भी चित्र वह बनाता और उसमें रंग भरता है, वह सब उसकी पोर्टफ़ोलियो फ़ाइल में जमा किए जाते हैं। इसमें सत्र के शुरू से अन्त तक किए गए उसके कार्यों का लेखा-जोखा होता है। मसलन, सीखे हुए शब्द, वाक्य,

कहानियाँ, मौसम की बात, ख़ुद से रचित कविता, आदि। इन वर्कशीटों पर शिक्षकों द्वारा प्रतिक्रिया भी लिखी होती है कि बच्चे ने क्या अच्छा किया है और उस बच्चे की क्या और सीखने में मदद करना है। हर माह बच्चे अपनी फ़ाइलों से रूबरू होते हैं।

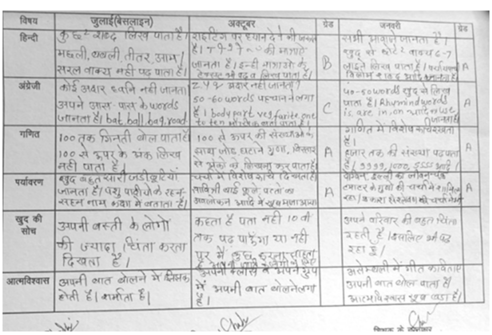


चित्र : कमल मालवीय

बच्चे ख़ुद की वर्कशीट के शुरुआती पन्नों में देखते हैं कि पहले वे क्या ग़लतियाँ करते थे। कैसे वे चार व पाँच लाइनों में लिखते थे, अब बड़ी कहानियाँ लिखने लगे हैं। पहले छोटी और बड़ी मात्रा में फ़र्क़ नहीं मालूम था तो ग़लत भी लिख देते थे। अब सुधार आया है, यह ख़ुद-से समझने लगे हैं। बच्चे इन फ़ाइलों में शिक्षक द्वारा दिए गए नोट को भी पढ़ते हैं। दीदी ने लिखा कि कहानी अच्छी बनाती है। फ़ाइल देखते हुए प्रतिक्रिया भी देते हैं कि दीदी, ये कविता हमने पेड़ के नीचे बैठकर लिखी थी...



चित्र : माया मौर्य



| विषय | जुलाई(बेसलाइन) | अक्टूबर | ग्रेड | जनवरी | ग्रेड |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- |
| हिन्दी | कुछ-२ शब्द लिख पाता है। मछली, थैली, तीतर, आम। सरल वाक्य नही पढ़ पाता है। | राइटिंग पर ध्यान देने की जरूरत है। [illegible] की मात्राऐ जानता है। इन्ही मात्राओ के [illegible] भी पढ़ व लिख पाता है। | B | सभी मात्राऐ जानता है। खुद से छोटे २ वाक्य 6-7 लाइने लिख पाता है। पर्यायवाची विलोम शब्द आदि जानता है। | A |
| अंग्रेजी | कोई अक्षर ध्वनि नही जानता। अपने आस-पास के words जानता है। bat, ball, bag, road. | 2-4 अक्षर नही जानता। 50-60 words पहचानने लगा है। body part, veg, fruit, one to ten [illegible] पाता है। | C | 40-50 words खुद से लिख पाता है। Rhyming words is, are, in, on आदि का use जानता है। | A |
| गणित | 100 तक गिनती बोल पाता है। 100 से ऊपर के अंक लिख नही पाता है। | 100 से ऊपर की संख्याओं के साथ जोड़, घटाने, गुणा, विस्तार से अंको को [illegible] कर पाता है। | A | गणित में विशेष रूचि रखता है। हजार तक की संख्या पढ़ पाता है। 9999, 1000, 5555 आदि। | A |
| पर्यावरण | खुद बहुत सारी जड़ीबूटियाँ जानता है। पशु पक्षीयो के रहन-सहन नाम कक्षा में बताता है। | चर्चा में विशेष रूचि दिखाता है। सावित्री बाई फूले, पत्तो का अवलोकन आदि में खूब मजा आया। | A | [illegible] के जीवन [illegible] के गुणो की चर्चा में शामिल रहा। [illegible] की चर्चा में [illegible] | A |
| खुद की सोच | अपनी बस्ती के लोगो की ज्यादा चिंता करता दिखता है। | कहता है पता नही 10वी तक पढ़ पाऊँगा या नही पर मैं कुछ करना चाहता हूँ अपनी [illegible] लोगो के लिए | | अपने परिवार की बहुत चिंता रहती है। इसलिए भी पढ़ रहा हूं। | |
| आत्मविश्वास | अपनी बात बोलने में झिझक होती है। शर्माता है। | अपनी क्लास में अपने ग्रुप में अपनी बात बोलने लगा है। | | असेम्बली में गीत कविताए अपनी बात बोल पाता है आत्मविश्वास खूब बढ़ा है। | |

वग़ैरह। कई बार बच्चे अपनी फ़ाइल समूह में भी दोस्तों को दिखाते हैं। और उनके द्वारा क्या सीखा गया, क्या नहीं इस बारे में बात करते है। एक दूसरे से सीखी हुई अवधारणा को देखकर ख़ुश भी होते हैं।

## आकलन के सन्दर्भ में माता–पिता का अनुभव

बस्ती सेंटर के बच्चे फ़ाइलों को घर भी ले जाते हैं, ताकि माता-पिता भी देख पाएँ कि कक्षा में क्या-क्या सिखाया जा रहा है, और बच्चा कैसे सीख रहा है? हम शिक्षक भी साथ में जाते हैं ताकि बच्चे जब माता-पिता को फ़ाइल दिखाएँ, तो हम उनके संवाद सुन पाएँ। पालकों के फ़ीडबैक भी हम शिक्षक सुनें और कक्षा में उन्हें लागू करें। इसके कुछ उदाहरण नीचे दिए गए है।

सावित्री : "मेरी बेटी अब किताब भी पढ़ लेती है। पहले वह थोड़ा अटक-अटक कर पढ़ पाती थी। अभी उसने मुझे 'नटखट गधा' की कहानी सुनाई। घर पर सामान लाने वाले अख़बार से भी कुछ-कुछ पढ़ती रहती है। उसका पापा हिसाब पूछता है तो सोचकर बता देती है। उसने अपनी फ़ाइल से 'I have a Bag' का टेक्स्ट पढ़कर बताया।"

मयूरी : "मेरा बेटा दो साल से स्कूल जा रहा है, पर पढ़ना नहीं सीखा। सेंटर पर जाने से इंग्लिश और हिन्दी लिखना सीखा है और

पढ़ता भी है। वह घर पर भाई को भी पढ़ाता है। कुछ-कुछ इंग्लिश के शब्दों का उपयोग करता है और मुझे बताता है कि दाई, आग को fire और लकड़ी को wood कहते हैं। पोएम भी गाता है। जब भी स्कूल भेजने का सोचती हूँ, सेंटर ही भाग जाता है। कहता है, स्कूल में बोर्ड से उतारते ही रहो। मैडम हर घण्टे बस लिखवाती रहती हैं।"

आज परीक्षा का स्वरूप कुछ अलग हो गया है, जिसने परीक्षा के डर को थोड़ा कम किया है। जैसा कि किताब, *बच्चे असफल कैसे होते हैं,* में लेखक जॉन होल्ट कहते हैं, "भय और असफलता साथ-साथ चलते हैं।" उन्होंने अपने कक्षा के अवलोकन कार्य से समझा कि शारीरिक हिंसा बच्चों पर बहुत अधिक असर डालती है। काम करने के दौरान उन्हें यह महसूस हुआ कि शिक्षक द्वारा सवाल का जवाब पूछे जाने पर और उस सवाल का जवाब न आने की स्थिति में बच्चा घबरा जाता है। सवाल के जवाब में वह कुछ भी उत्तर बिना सोचे-समझे दे देता है। सही जवाब मालूम न होने पर वह ख़ुद को गुनहगार और लाचार महसूस करता है। परीक्षा के समय भी सही जवाब न आने के कारण वह कई बार मानसिक रूप से परेशान होता है। इस तरह की अदृश्य दिखने वाली मानसिक हिंसा भी बच्चों की मानसिक स्थिति को बिगाड़ देती है। शिक्षक बैठकों में इनपर बातचीत के साथ ही, आकलन के वैकल्पिक तरीक़ों पर लगातार सोचने-विचारने और काम करने की ज़रूरत है।

---

माया मौर्य ने पिछले 15 साल मुस्कान संस्था, भोपाल के साथ एक शिक्षिका के रूप में कार्य किया है। वे बस्ती सेंटर पर कामकाजी और स्कूल ड्रॉपआउट बच्चों को खेल-खेल में मनोरंजक तरीक़े से सीखने-सिखाने का कार्य करती रही हैं। उन्हें बच्चों के बीच पढ़ाने में ख़ुशी मिलती है और उनसे बहुत कुछ सीखती हैं। माया को किताबें पढ़ने में रुचि है। वर्तमान में वे अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन भोपाल में कार्यरत हैं।

सम्पर्क : maya.mourya@azimpremjifoundation.org